भूमिका

हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन में हम कई लोगों से मिलतें हैं, जिनमें कुछ प्रकार की विशिष्ट परिस्थितियां भी हैं। जनगणना (सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, 2011) के अनुसार, कुल जनसंख्या का 2.68 प्रतिशत भारत में किसी न किसी प्रकार की विकलांगता के साथ मौजूद हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत की कुल आबादी का अनुमानित 0.04 प्रतिशत (5,00,000 से अधिक) बधिरांधता के साथ जी रहे हैं। वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ डेफब्लाइंड की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, यह दर्शाता है कि दुनिया की आबादी का 0.2 से 2 प्रतिशत लोग बधिरांध (वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ डेफब्लाइंड, 2018) के साथ रह रहे हैं। बधिरांधता को अब विकलांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 में शामिल किया गया है। इस अधिनियम के तहत बधिरांध व्यक्तियों के लिए विशेष अधिकार दिए गए हैं, जैसे सुलभ शिक्षा, रोजगार में आरक्षण आदि सम्मिलित है ।

बधिरांधता, एक व्यक्ति में दृष्टि और श्रवण हानि की अलग-अलग स्तरों का एक संयोजन है। यह एक विशिष्ट विकलांगता है जो व्यक्ति के लिए भारी चुनौतियां लाती है। बधिरांधता के कई कारण हैं। यह सभी उम्र के लोगों को अलग-अलग तरीके से प्रभावित करता है, और कोई भी दो बधिरांध व्यक्ति समान नहीं होते हैं। वातावरण के बारे में हम जो कुछ भी सीखते हैं उसका लगभग 95% दृश्य और श्रवण के माध्यम से सीखते है, बधिरांध व्यक्तियों के पास यह अवसर नहीं होता है और उन्हें शेष बची इंद्रिय क्षमता के साथ सब कुछ सीखने और समझने की आवश्यकता होती है जो लगभग 5% योगदान देता है। बधिरांध व्यक्तियों को संचार, गतिशीलता और विभिन्न कौशलों को सिखने में भारी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो उन्हें उनके आसपास की दुनिया से अलग करता है। बधिरांधजनों के पास विशिष्ट शैक्षिक, व्यावसायिक प्रशिक्षण और अन्य आवश्यकताएं हैं। हालाँकि, पर्याप्त सेवाओं और संसाधनों की कमी के कारण उनके, बधिरांध व्यक्तियों को अक्सर अपने स्वयं के घरों से लेकर बड़े पैमाने पर सामाजिक स्तर पर अलगाव का सामना करना पड़ता है।

भारत की सर्वाधिक आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में हैं, जहां अधिकांश बधिरांध व्यक्तियों तक उनके अधिकार पहुंच नहीं पाते और उसे प्राप्त करने के लिए उपयुक्त सेवाएं और अवसर नहीं मिल पाता है। यह स्पष्ट है कि ऐसे बहुत कम संस्थाएं हैं जो कौशल, विशेषज्ञता और वित्तीय संसाधनों से संबंधित कारणों के लिए, बधिरांधजनों को आवश्यकतानुसार उन्हें शिक्षा, प्रशिक्षण, पुनर्वास की सेवाएं प्रदान करते हैं। आम जनता, नीति निर्माताओं, चिकित्सा और पारा-मेडिकल पेशेवरों, विकास योजनाकारों और गैर सरकारी संगठनों के बीच बधिरांध के बारे में जागरूकता का अभाव है।

बधिरांध व्यक्तियों की जरूरतों को समझना और व्यक्तिगत सेवाएं प्रदान करना एक मुश्किल काम है। बधिरांधता के अतिरिक्त अन्य विकलांगतायें या विकासात्मक विलंबता, जटिलताओं और व्यक्तिगत आवश्यकताओं को बढ़ाती है। कई बार विशेष शिक्षकों एवं सामुदायिक कार्यकर्ताओं को बधिरांध व्यक्तियों का समुदाय आधारित पुनर्वास करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए, इस पुस्तक को बधिरांध व्यक्तिओं की प्रकृति एवं उनके समुदाय आधारित पुनर्वास कार्यक्रम को समझने में मदद करने के लिए तैयार किया जिससे की वह समाज में बधिरांध व्यक्तिओं के पूर्ण समावेश में सहायता कर सकें।

आभार

सबसे पहले हम अपने सभी बधिरांध बच्चों और वयस्कों, उनके परिवार के सदस्यों, साथी संगठनों और विशेष शिक्षकों का धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने हमें बधिरांध व्यक्तियों की अनोखी दुनिया को समझने का अवसर प्रदान किया। उनकी सहायता के बिना हम यह अनुभव नहीं कर सकते थे, जिनकी शिक्षा एवं पुनर्वास पर यह पुस्तिका आधारित है। हम भारत के पूर्वी क्षेत्र में बधिरांध बच्चों और वयस्कों को गुणवत्ता और निरंतर सेवाएं प्रदान करने के लिए डेफ़ब्लाइंड रीजनल सेंटर (डीबीआरसी)- पूर्व के कार्यकर्ता समूह के अथक प्रयासों को धन्यवाद देना चाहेंगे। इस पुस्तिका का उन्हें एवं सेंस इंटरनेशनल इंडिया रिसोर्स एंड इन्फॉर्मेशन टीम के सदस्यों द्वारा किए गए सहयोग को जाता है। हम संसाधन सामग्री तैयार करने के लिए प्रदान की गई राशि के लिए पॉल हैमलिन फाउंडेशन एवं अन्य सहियोगियों का भी धन्यवाद् करते हैं जो समाज के बीच बधिरांधता के बारे में जागरूक करने में सक्षम हैं।

खंडन: *इस पुस्तक में दिए गये विवरण की सटीकता एवं वास्तविक्ता को सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास किये गये हैं। इस पुस्तक में मौजूद सभी चित्र बधिरांधजनों के परिवार जनों के आज्ञा उपरान्त प्रयुक्त किये गए हैं। इस पुस्तक का उपयोग केवल एक सामान्य मार्गदर्शिका के रूप में किया जाना चाहिए, न कि लेखन और प्रकाशन की अंतिम जानकारी के रूप में। इस पुस्तक का उद्देश्य पाठक को शिक्षित करना है, न कि आकांक्षा लायंस इंस्टीट्यूट ऑफ लर्निंग एंड एम्पावरमेंट, सेंस इंटरनेशनल इंडिया एवं पॉल हैमल फाउंडेशन के दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करने के लिए किसी भी प्रकार से लिया जा सकता है।*

विषय सूचि

१. बधिरांधता का परिचय...४
२. समुदाय आधारित पुनर्वास की संकल्पना.......................................५
३. समुदाय आधारित पुनर्वास के प्रमुख सदस्य..................................६
४. बधिरांध बच्चों के सामुदायिक समावेशन की रणनीति.....................७
५. सामुदायिक कार्यकर्ता एवं समन्वयक की भूमिका...........................८
६. बधिरांध बच्चों के शिक्षण में परिवार कों एवं समुदाय की भूमिका......९
७. अंजलि की कहानी...१०

बधिरांधता का परिचय

बधिरांधता

- बधिरांध व्यक्ति, दुनिया को समझने के लिए स्पर्श, स्वाद और गंध का उपयोग करते हैं
- यह बच्चे के संचार, गतिशीलता और वातावरण की जानकारी इकत्र करने की क्षमता को प्रभावित करता है
- कुछ बधिरांध व्यक्तियों के पास आंशिक दृष्टि या श्रवण क्षमता होती है
- यह बधिरांध बच्चों को अलगाव और अकेलापन की ओर ले जाता है
- एक बधिरांध बच्चे की ज़रूरत दुसरे से बिल्कुल भिन्न होते हैं
- यहां तक कि परिवार के सदस्यों को अपने बच्चे की दैनिक जरूरतों को समझने में मुश्किलें आती हैं
- गंभीर रूप से बच्चे के संचार को प्रभावित करता है

समुदाय आधारित पुनर्वास की संकल्पना

समुदाय आधारित पुनर्वास के प्रमुख सदस्य

सामुदायिक सदस्य

- माता-पिता
- परिवार के सदस्य
- पड़ोसी
- ग्राम पंचायत
- जनप्रतिनिधि
- अन्य सामाजिक कार्यकर्ता

सामाजिक संस्था

- विशेष विद्यालय
- योजना अधिकारी
- सामुदायिक कार्यकर्ता
- विभिन्न परचिकित्सक (थेरेपिस्ट)
- व्यवसायिक प्रशिक्षक

सरकारी संस्थान

- सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र
- आंगनवाड़ी सेविका
- आशा कार्यकर्ता
- समग्र विद्यालय
- जिला अस्पताल
- जिला पुनर्वास केंद्र
- राजकीय व्यावसयिक प्रशिक्षण केंद्र इत्यादि

बधिरांध बच्चों के सामुदायिक समावेशन की रणनीति

सामुदायिक परिवेश की जानकारी

समुदाय में मौजूद संसाधनों की जानकारी

सामुदायिक जनप्रतिनिधियों से संपर्क एवं समन्वय

जिला एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र कर्मियों से संपर्क

बधिरांध बच्चों के लिए आंगनवाड़ी से संपर्क एवं समन्वय

परिवार एवं समुदाय को बधिरांधता के प्रति जागरूक करना

परिवार को उनके बच्चे की शिक्षा एवं पुनर्वास के अवसरों की जानकारी

बधिरांध बच्चे/ व्यस्क के चिकित्सीय जांच

बधिरांध बच्चे/ व्यस्क की कार्यात्मक क्षमता की जांच

अभिभावक को बच्चे के शिक्षा बधिरांध बच्चे/ व्यस्क की कार्यात्मक क्षमता की जांच

सामुदायिक कार्यकर्ता एवं समन्वयक की भूमिका

- समुदाय में बधिरांध व्यक्तियों को चिन्हित करना
- समुदाय में मौजूद संसाधनों को ढूँढना
- पोस्टर, नुक्कड़-नाटक आदि के माध्यम से जागरूकता फैलाना
- आपके संस्था द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी देना
- माता-पिता को उनके बच्चे के बारे में अवगत करना
- बधिरांधता का प्रमाण पत्र प्राप्त करने में सहायता करना
- शिक्षण सामग्री, सहायक उपकरण एवं सुविधाएँ प्राप्त करने में सहायता करना
- पंचायत सदस्यों को बधिरांध व्यक्ति के ज़रूरतों से अवगत कराना
- समग्र विद्यालय को जागरूक करना
- बधिरांध बच्चे को विशेष शिक्षण प्राप्त करने में सहायता करना
- आंगनवाड़ी, समग्र शिक्षा, स्वरोजगार के बारे में जानकारी देना
- पूर्व व्यवसाय सम्बंधित प्रशिक्षण देना
- अभिभावक को स्वस्थ केंद्र की जानकारी देना
- अभिभावक को जिला पुनर्वास केंद्र के जानकारी देना

बधिरांध बच्चों के शिक्षण में परिवार कों एवं समुदाय की भूमिका

परिवार की भूमिका

- शिक्षक के द्वारा दिए गये मार्गदर्शन को आगे बढ़ाना
- अपने बच्चे को कौशल सिखाने में मदद करना
- बच्चे/ व्यस्क को भावनात्मक सहायता देना
- बच्चे के स्वास्थ्य पर ध्यान देना
- बच्चे/ व्यस्क को कौशल विकास में योगदान देना
- बच्चे के विकास को ले कर सकारात्मक दृष्टिकोण रखना

समुदाय की भूमिका

- परिवार को भावनात्मक सहयोग प्रदान करना
- सामुदायिक कार्यक्रम में बच्चे/वयस्कों शामिल करना
- ग्राम स्तर पर बधिरांधजनों की जानकारी रखना
- समुदाय के बच्चों के साथ खेलने का अवसर
- समुदाय में रोज़गार के अवसरों एवं सुविधाओं में प्राथमिकता देना

अंजलि की कहानी

मैं अंजलि चौहान, रायपुर के अभनपुर के छोटे से गाँव की रहने वाली हूँ। मेरे लिए दुनियाँ मेरी उँगलियों तक सीमित हो चुकीं थी। जहाँ तक मेरी हांथ पहुँचती मे, वही मेरा संसार होता था। जब मैं छोटी थी तब मेरे माता-पिता दिहाड़ी मजदूर थे और मेरे भाई-बहनों को विद्यालय भेज कर मजदूरी करने चले जाते थे और मैं एक बंद कमरे में अकेली रह जाती थी। मुझे अपने आसपास के वातावरण को समझने में कठिनाई होती थी और मेरे परिवार के सदस्य भी मुझे समझ न पाने पर खुद को बेबस महसूस करते थे। इसके चलते हम खुद को एक-दूसरे से दूर पाते थे। लेकिन एक दिन मेरे जीवन ने करवट ली और मेरे घर एक आकांक्षा विद्यालय से एक अंकल आये, जो मुझ जैसे कई बच्चों को जीवन के कौशलों को सिखाने और पढाने का काम करते थे। उनके आने से मेरे माता-पिता के जीवन में मेरे को लेकर एक आशा की किरण जगी। उन्होंने मुझे जीवन की छोटी-छोटी कौशलों को सिखाया ताकि मैं अपने जीवन में बेहतर कर सकूँ। मेरे माता-पिता को मुझे समझने में 6 महीने लग गये।

कुछ समय उपरांत सेंस इंटरनेशनल इंडिया के द्वारा अहमदाबाद में एक अभिभावक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उस कार्यक्रम में मां ने भाग लिया और वहां पर देखा की उनकी बच्ची जैसे बहुत सारे बच्चे हैं जो लोग अच्छे से सीख रहे हैं और उनके व्यवहार में बदलाव आ रहा है। जब उन्होंने वहां पर जो कुछ सीखा, उसके बाद उन्होंने ठान लिया कि अब जाकर यह सब मुझे अपनी बेटी सिखाना है। उसके बाद मां ने मेरे विशेष शिक्षक की सहायता से मुझे घर के कार्य को सिखाने लगी जैसे कपड़ा धोना ,खाना खाना, नहाना, बाहर घूमने जाना, बर्तन धोना, सब्जी काटना, सामाजिक व्यवहार, दूसरे लोगों से बातचीत करना, दोस्तों के साथ खेलना आदि कार्यों में सम्मिल होने लगी। मुझे समुदाय की हर कार्यक्रम में शामिल किया जाने लगा। जब भी गांव के हर कार्यक्रम सम्मिलित की जाने लगि हूँ। साथियों के साथ खेलना, तालाब में नहाने जाना आदि कार्य करने में मुझे कोई समस्या नहीं होती।

विशेष शिक्षक ने मुझे माला बनाना, राखी बनाना, पैसे का लेनदेन सिखाया। धीरे-धीरे मैने ये सब सीख लिया। अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए सेंस इंटरनेशनल इंडिया की तरफ से एक फैंसी स्टोर खोलने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की गई। आज मैं अपनी बहनों के मदद से फैंसी चीजें बेच रही हूँ। आज अपने माता-पिता के ऊपर बोझ ना बन कर उनको घर चलाने में मदद करके मुझे ख़ुशी मिलती है।

डेफब्लाइंड रीजनल सेंटर- पूर्व

आकांक्षा लायंस इंस्टीट्यूट ऑफ लर्निंग एंड एम्पावरमेंट को सेंस इंटरनेशनल इंडिया के समर्थन से पूर्वी क्षेत्र का बधिरांध रीजनल सेंटर (DbRC-East) बनाया गया है, जिसके अंतर्गत बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और छत्तीसगढ़ शामिल है। हम बधिरांध बच्चों / व्यक्तियों को सेवाएं प्रदान करते हैं तथा साथ-साथ सहयोगी संस्थाओं के माध्यम से उनको सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। हम बधिरांधता के क्षेत्र में सहयोगी संस्थाओं / गैर-सरकारी संगठनों की क्षमता को विकसित करते हैं ताकि वे बधिरांधता से प्रभवित बच्चों / व्यक्तियों तक पहुंच सकें और उनके आवश्यकता अनुसार शिक्षणिक एवं पूर्व व्यवसायिक सेवाएं प्रदान कर सकें। DbRC- बधिरांध बच्चों और वयस्कों के लिए गुणवत्ता वाली सेवाओं को लागू कर रहा है। साथ ही बधिरांधता / बहु-संवेदी अक्षमता पर कार्य करने वालों, विशेष शिक्षकों, सामुदायिक कार्यकर्ताओं, चिकित्सक एवं पारा-मेडिकल पेशेवरों, सरकारी अधिकारियों और समग्र शिक्षा के शिक्षकों को बधिरांधता के प्रति जागरूक करने एवं प्रशिक्षण देने का कार्य रहा है।

केंद्र आधारित शिक्षा

यह एक तरह की प्रक्रिया है जिसका लक्ष्य कम खर्चों में, निश्चित अवधि के अंतर्गत व्यवस्थित और गुणवत्तापूर्ण सेवाओं के साथ व्यक्तिगत जरूरतों पर ध्यान देना हैं। इस शिक्षण मॉडल में, बधिरांध छात्रों को विशेष शिक्षकों की सहायता से चिकित्सीय सेवाओं के साथ-साथ गहन शैक्षिक सेवाएं प्रदान करते हैं और उन्हें अपने जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए लिफ्ट, रैंप, सुलभ शौचालय, हैण्डरेल और चिन्हों आदि सहित सुलभ सुविधाएं भी प्रदान करते हैं। इसके अलावा उनके अधिकारों और समाज में उनकी भागीदारी बढ़ाने में सहायक बनते हैं।

समुदाय एवं गृह आधारित कार्यक्रम

विशेष शिक्षक, सामुदायिक कार्यकर्ता एवं फिजियोथेरेपिस्ट बधिरांध बच्चों और वयस्कों को उनके घर पर आवश्यक हस्तक्षेप और शैक्षिक सेवाएं प्रदान करते हैं। परिवार के सदस्यों की मदद से हम बच्चों को इस तरह प्रशिक्षित करते हैं ताकि वे अपनी अधिकतम क्षमताओं का उपयोग कर

सकें। गृह आधारित सेवा के माध्यम से हम पूरे परिवार को साथ लेकर बच्चे को आवश्यक सेवायें प्रदान करते हैं। विशेष शिक्षक बच्चे के साथ दो घंटे से अधिक समय बिताते हैं तथा शैक्षनिक क्रियाकलाप करते हैं जो उन्हें अपने घर और सामुदायिक वातावरण में जीवन के विभिन्न क्रिया कौशलों को सीखने में मदद करता हैं।

चिकित्सीय सहायता

विशेष सुविधाएं प्राप्त करने वाले सभी बधिरांध बच्चों/वयस्कों का दृष्टि एवं श्रवण क्षमता की चिकित्सीय जांच करवाते हैं, जिसके बाद सम्बंधित विभाग से उन्हें विकलांगता प्रमाण पत्र एवं सरकारी सुविधाओं के लिए सहायता प्रदान करते हैं। इसके साथ ही हम दृष्टि और श्रवण मूल्यांकन के कार्यात्मक मूल्यांकन भी करते हैं, जो कि सेंस इंटरनेशनल इंडिया द्वारा विकसित चेकलिस्ट का उपयोग करके मूल्यांकन का एक अनौपचारिक तरीका है।

आय सृजन गतिविधि (IGA)

यह सहायता बधिरांध वयस्कों को परदान की जाती है, जिसमे हम उन्हें अवसर देते हैं की वो स्वयं या अपने परिवार की सहायता से खुद का व्यापार शुरु कर सकें, जैसे सौन्दर्य प्रसाधन का छोटा दूकान, आटा चक्की, अगरबत्ती की पैकिंग, फ़ाइल बनाना आदि। जहाँ बधिरांध व्यक्ति अपनी क्षमताओं का उपयोग कर आजीविका अर्जित कर सकें। वर्तमान में कई बधिरांध व्यस्क इस सुविधा के द्वारा धन अर्जित कर रहे हैं।